

नवमयाधुनमकस्मिन्मय रगवाक्के वस्त्रांमहानग शीविहवमिस्मा नरुहयवाक्के
कमनिस्तथागमाइहसम्यक्ते वृद्धाननक किं कृ गतसदुष्टे ४ साई ऊनवनमहा विहान
नरां कालितवान् ॥ अथखल्व्यायूयान् ॥ नानियूयान् ॥ धर्मसिनायेमिहिकृ वृद्धयासनादका
समूहमासर्गेदत्ता दक्षिधजानुमलु लंष्टथिद्यामुमिहाय अतसरुगवान् वाधिमधु
वलागुगर्गस्तनायसंक्रामिस्मा ॥ उयसंक्राम्यकृमा ॥ लिर्गवर्क विहयदकि धीकृत्यय
धर्मोदयवायु ॥ रगवन लोकनाथस्त्वसर्वे ॥ ४ श्रीमताम्ब वध सर्वलाङ्गान्मया लार्थवद

क
वि

समकाग, चनकिमासांयतिदि कनित्रीशून॥ धूर्णयदृष्टन रुलानवाव, कलत्रमायन
वयूचनिर्वर्ली, सुसुद्ध ४४वनयतिदृष्टीष्ट, विष्ठाकप्रधमयिचिन्नीयी॥ कनयाथनम
न्ध, वसामयुवद ४४विना॥ किंशुक्रकिमयिवाष्ट, किंरुत्वाजीवयन्मम॥ कगशुद्ध, प्रधं
म, ममात्मायालयकथं, नजीवन्मिमनान, मन्धर्गगच्छयन्निहि॥ वृत्तिरयंयुदित्वा
आकन्दनोदनादिनी, कप्रधनाययन्ध, ललाटंवायिमहिना॥ अथाशदीये कप्रवृद्धता
थ ४४सन्धीवाचमहाविद्ययान्, निष्कम्ययानि ४४यत्तयारि युक्ते ४४सुगदने सर्वप्र

म२

रयारितानि ४॥ यदसुगथागतकथं, प्रमत्तिनानादुमवाङ्मयर्थ, सर्वरुनाथप्रवितिय
ताव, युकागयसर्वनादप्रवृत्ते॥ वृक्षादिवम्यासुमनारि युक्ते ४४कृष्णनियुष्टाधिसुमरुव
क्ति, रुलेवनके ४४ययुनानिवृक्षा, निवृद्धप्रसायधसादिधावीन॥ वरुक्रथा ४४स
विचित्रवले, मनाहवेधवनवाहितानी, अष्टमैवाल्यादिरिदेवद्वाना, ऊद ४४सरु
मुधसमरुव ४४गस्यांसप्रस्थादिवियुष्टकान्ये ४४यथात्यलाये ४४कमदादियुक्ते ४४सकट
की ४४धनसत्रावृद्धे, समदुमहि ४४सुपुष्टरुयुक्ते ४४वनववायकिगलेयुयता ४४शुकादि

क
वि

शालीकमयूत्रयूथाशावननिहर्षनिवृत्तानिकश्चित्, प्रस्तादिष्टैर्विविधैश्चशात्रेऽप्यत्र
निहर्षमकत्रादिमीनाऽसुखीचक्रमाजलजकवस्तुयत्रस्यत्रऽयमवि(शयरावाऽवतमम
प्रानययूथनाथाऽनमादशावाववात्रयाध्रयमानसाहवहवतस्मात्॥ मस्मिन्नवसत्रगत्य
चक्रसूत्रेयरायूगऽधीरेष्वकामतवृद्धा, गच्छन्निगहनवन॥ तदोवातत्रकाठिगमसह
माधियमिताहयेस्तर्तवृद्धतगवर्कहृष्ट, वातव(गद्ययुहयेयमुदितमनसायधसहर्लंग
हिन्वा, निष्कुमयनरुगवास्तनायसंकाकऽमूथसवानत्राधियन, स्नानकप्रस्यदास्याः

७

याधिर्यां, शीदीयर्कत्राययायच, त॥ तदाशीदीयकत्राऽरयमदयासहयुहयेधवतमा
ह॥ साधुसा(धामहाकयनेवेननेकुमामानतवतत्युध्यस्यसमाकुलं सुगनीददानस्यस
वीर्जंरवगाऽरुर्तसर्वसुखयदं सुरुलंदंमात्रायसिद्धार्थं, मानुषीसमवायसत्सुखयदं
तस्माच्चरुमीध्वनं॥ ॥ अथर्तदृष्टान्तेष्ववानप्रधनेर्विविधैश्चानिरुल्लेखेभान्या
दायनस्मैददन्ति॥ तदायूनर्तगवानवाचत॥ वानवाऽमरुल्लान्दान, मानवस्त्वैरविश्र
थायूर्यल्लानाकप्रसाई, दशनसद्यस्त्ववतु॥ तगध्रकामतवृद्धाऽवानवानवलाकयन

क
वि

पृष्ठमावाननाकच. मूनगर्हं निगाहस॥ ततः यतकि धानना ४ सर्व. सहायां जीर्णकृत्य
महाय कला क धानवशावाभदकि धयामा. गविन धानि नि कू ड कं धा जीर्णव रुग सर्व
न नि कू नि सर या नि तं ग द क (६४) पू सं पू र्ण. विलाय कृत्य या दि ति सा विला य त वे धू वा
दृष्ट वी र ग वा धू ना नू. तं दृ ष्ट वा न ना न र्ध. आ ग कृ ग कृ नू क वा न. त दा ह्ना ना क वा ना म वा
न नै क य नि कू नि. नि य त कि स हा या र्ण. न य ध नि ध्रु स स वा न॥ कृ ग कृ म या सार्थ. त क
धी म म वा गु त ध न द ना (७५) य नि ग ला. व त कि दृ ष्ट व धू ना न॥ त दो र ग वा नू ह्ना ना क वा ना म

३

श्री व मा ह॥ य ध प ध म हा क थ न व स हा या ४ य त कि. अ ग्रा र्थ य ध न ड की र्ण य ड की
रु थ नि व च नं य दा य य कू. नि त दा स म हा क पि र्म हा य नू वा र व नि॥ अ थ न द व नं ध
त्वा स हा य वा न ना न रि वी अ य क म र्ण त ध य त त्म मी र्ण ग कू नि. ग ला य य ध नि म॥
द र्शित मा ल द स र्वा न हा य वा न ना ना नू य नू यं या द र्श व व ४॥ त दा ह्ना ना क वा वि सि न ४
य मू दि ग म न सा ह्ना व मा ह॥ अ हा म ख वू द य दा न सा वा. द र व मा नू य न वी त सो र्वा
आ ग कृ ग कृ नू वी न या ला. दी य क ना य न म ४ या द य ध॥ अ थ न वा न ना ४ सर्व म न य र

क
वि

मागमा॥ अथ ह्यना कवादिमहाय यथैकन दीय के त्रै र गवर्ने वि० य द किं धी क ह्यम
तां कालि नवान ॥ तदा ह्यना कत्र (धं मां ग) धा मरा य त ॥ लीं क र्त्तुं व व र्धुं ज गति र्दृ य द
दं य म दा मा लो भ वं ना थ र्त्तुं सो र्वा दा ना य त्र म गु ध ति धि र्त्तुं म या वे न म र्त्तुं । त्रा जो कं वि
त्यु दी या इ न ल ग य न नि (धो भी त वा लि यु द र्त्तुं त्रा (ग र्त्तुं व र्त्तुं दा ना क लु घ र्त्तुं व र्त्तुं सा त्र
या ल य व र्त्तुं ॥ अथ र ग वा ल्यु र्त्तुं सि त सि त व द ना वा न वा धि य नि म द वा व र्त्तुं ॥ ह्यना क
त्र त सा ल्यु धा ल्य र्त्तुं ना ली य र्त्तुं य य र्त्तुं क र्त्तुं न न क र्त्तुं म द र्त्तुं मा त्र ॥ य र्त्तुं मा न व र्त्तुं र्त्तुं

य ॥ रु मि दा ना रु व हा ग्यं वि द्या य र्त्तुं र्त्तुं र्त्तुं । रा ग्यं गु धा दि गि ल्य र्त्तुं स र्त्तुं सो र्वा
व य र्त्तुं र ॥ रा ह्यना क व का मा धि नि ग त्र मा र्त्तुं वा र्त्तुं र्त्तुं वि द्या थ ॥ र्त्तुं र्त्तुं र्त्तुं र ग वा न म
द (धो सो ॥ न र ॥ य र्त्तुं र्त्तुं र क ल्य धी दी य के र ॥ सं म्य र्त्तुं व र्त्तुं र ग वा न म मा धि र्त्तुं ना इ र
व र्त्तुं ॥ र्त्तुं नि क यि सा व दान य र्त्तुं र्त्तुं र्त्तुं ना ना म ॥ य थ मा ध्य य ॥ ॥ र्त्तुं ॥ तदा म हा
य र्त्तुं र्त्तुं र व द म ह न न द न ग र्त्तुं र म सी थ ग र्त्तुं काल य र्त्तुं र ॥ ना ना य द र्त्तुं र ग य र्त्तुं र मा न
य र्त्तुं र ॥ तदा म र्त्तुं र (धो ना ग र्त्तुं र क र्त्तुं र य र्त्तुं र र्त्तुं र क र्त्तुं र य र्त्तुं र र्त्तुं र मा

म ०

क
वि

समा मानुष्यत्रिर्गुणैश्च निःशामिगुणैश्च मानुष्यधकथं च त्रिगुणं भागदायुष्यधमानुष्य
कथयामासमानुष्ययुधनष्टाकं सैसात्रिरुधवयिषमनीतिख्यातवान्सर्वदेवाम्
प्रनयेत्तयिषातिथीकं रुतयतश्च गतिप्रव्याधिसर्वतः विद्वांसधार्मिकाचार्याः प्राज्ञा
प्राज्ञाविष्णवस्तथा मनुनीतिप्रयागरूढमविद्यार्थयालगः सैषकदेवसर्वरूढदेवगा
यत्रिकीर्तितः कामिकासूत्राभाहाष्टाव्रीत्रायकीनः सायालूचध्वयायिष्ठाकृत्राय
नावलीषाठिषायवधुआधवान्दूश्च संग्रामयुयिर्गमः महारुकाप्रजिक्तात्रयानवा

सूत्रकथनमादागात्रः किंवत्सात्रः देवादिगुणवसदा कलवन्ध्रसंसावी विस्मनीध्र
विचक्रष्टा स्वाधीनश्चत्रगात्रः सखरावानूवात्रकः शुर्लीषयद्रवाक्कातिमानुषा
मितिकथनमीतनृथयूसैर्वाधतत्रर्गवैलरानीदूर्गदण्डुविदण्डयष्टण्डक
त्राकनैविप्रभावधिकावास विप्रश्चनविधायकः नानाज्ञालयूसैवध्वनित्रगतीर्थ
गः रुमिष्टादूर्गार्कमलिनः सूत्रः रसार्गैरुभलश्चनः विरुर्गैकृकनयायी विच
क्राणैर्गिकर्चूत्रायनविहठिकसंहारा विष्टनाग्रमियासिना निर्विघ्वासीचडाहीध्र

क
दि

रुगांशः यत्र कीर्तिता ॥ अग्निदुर्गमश्च दूषीयाद्यावतामरुतुनू ॥ महर्गद्वला
निष्ठा, वक्रासिध्वलविरुता ॥ अश्रुयि यामिता ॥ अंशान् अश्रुयि विकाशिता ॥ विक्रयद्वि
श्रुतर्चा ॥ विख्याता ॥ अंशकांशजा ॥ अंशमग्निका ॥ सत्त्वा ॥ मान् अश्रुयवर्तन ॥ गत्मादि
विश्वसन्ननयुथश्च अश्रुयवर्तन ॥ अश्रुयवर्तन ॥ अश्रुयवर्तन ॥ अश्रुयवर्तन ॥ अश्रुयवर्तन ॥
अश्रुयवर्तन ॥ अश्रुयवर्तन ॥ अश्रुयवर्तन ॥ अश्रुयवर्तन ॥ अश्रुयवर्तन ॥ अश्रुयवर्तन ॥
अश्रुयवर्तन ॥ अश्रुयवर्तन ॥ अश्रुयवर्तन ॥ अश्रुयवर्तन ॥ अश्रुयवर्तन ॥ अश्रुयवर्तन ॥

मान् अश्रुयविनायन ॥ गत्मादवादिषन्नयो मान् अश्रुयवर्तन ॥ अश्रुयवर्तन ॥ अश्रुयवर्तन ॥
मान् अश्रुयमिद्वान ॥ सग ॥ अश्रुयवर्तन ॥ अश्रुयवर्तन ॥ अश्रुयवर्तन ॥ अश्रुयवर्तन ॥
अश्रुयवर्तन ॥ अश्रुयवर्तन ॥ अश्रुयवर्तन ॥ अश्रुयवर्तन ॥ अश्रुयवर्तन ॥ अश्रुयवर्तन ॥
अश्रुयवर्तन ॥ अश्रुयवर्तन ॥ अश्रुयवर्तन ॥ अश्रुयवर्तन ॥ अश्रुयवर्तन ॥ अश्रुयवर्तन ॥
अश्रुयवर्तन ॥ अश्रुयवर्तन ॥ अश्रुयवर्तन ॥ अश्रुयवर्तन ॥ अश्रुयवर्तन ॥ अश्रुयवर्तन ॥
अश्रुयवर्तन ॥ अश्रुयवर्तन ॥ अश्रुयवर्तन ॥ अश्रुयवर्तन ॥ अश्रुयवर्तन ॥ अश्रुयवर्तन ॥

क
यि

[illegible]

۷۷

प्रगतास्तनाकवादीकप्रधात्कामार्थिमहानगत्रऊर्त्तवकात्र४॥ ॥ॐनिष्ठीकयित
वदानमानुषावगात्रवर्धुनानामद्वितीयाध्याय४॥ ॐ॥तन४कामार्थिमहानगर्थां
वनानन्धानामसार्थवाहामहाधनकनकसमुद्राकावकाकागत्रसम्यन्ताइरुत॥नस्या
लायांलावासिन्यागर्धयुवतीरुवत॥यदाक्षयनायविष्टसत्यस्वर्ग्यधामिस्मा॥तदास्वप्ना
नप्रगतास्तर्वुवनानन्दसार्थवाहवृत्तान्ककर्थानिवदयामास॥यधामिममगास्वप्नसन्द
नास्यासिबर्धुजा४॥सकलशुवन॥भारा४॥धीयूनाशुचप्रयाधासुननिष्ठुदिविनश्यामरुना

布 3

दा नदा ना ४। म म ड द त्रि य रा वा ४ य य ध र्म धी ४ यू का ॥ ॐ नि धु स्वा रु व ना न न्द म न सा सु क
 जा ना व न सु ॥ ग ना द षा मा सा ने न ग न य सु नि का ला ॥ रु त्ना य दा रु व ना न न्द न जा न क मो दि
 सु का वा र्थ वि वि ध य य धू य ग न्ध ने व या दि के र्म सं या ज या मा स ॥ अ थ य रा हि ने र्जा न क ३
 र्मा दि सु का वा ॥ रु त्ना न न ४ सु र नि धि न क र्म मू र्क र्त्त ना मा क र ध य र्ध के रु त्ना य नि षा हा म १२
 वि धि ना यू त या मा स ॥ न न य रि ति ४ र्म ज ना ४ ध र्म धी वा ल य य म ॥ अ थ न क ६ धी दी य क
 रं या न वी व न मा दा य णी व ध णु का रु म्पा का मा र्थि म हा न ग र्था ॥ अ व क स धे ४ सा र्द ग न वा न् ॥

क ३

ग ना जि न य के ज य न न ग का मा र्थि यू र्था वि वि ध सं धे ४। द्वा रि ण ना लं क न सो म्भ ग ना र्ण
 स मूर्ध न क र्त्त ४ सि ता न य र्ण ॥ य दा न वू द्वा र ग वा न्द ना व ॥ स द रि धं यो द म रि के ल नी
 ल सा न ला ल्य के ज म द रु वं मा धि दे र्ण म वि वि नि र्ण य न ॥ क वि त्ति ना रु स्य ग वा रु स्वी
 के ५ थ रु य धा लं क न वा रु णा रि धे ४। व न्ना य ल का व रु न वी व रा त्ति ना न वा कि व रु ३
 ल्य म ही वू हा नि व ॥ क वि च म्भ क मा ल नी कू ल व का न्यु या नि यू या धि य न् क वि त्क
 क म च न्द ना गु रू ग र्ण या ण क चू र्ण नि व ॥ क वि ता न व भा ल्य ला नि स व ति ४ य ग्दा म

क
वि

विविध, कविदत्तमयानिकाकृतमयाक्षुग्राधिलाकारमान॥ एवंविधसानग
प्रीतनाडं ४ सुग्रासुत्रन्देध्वनत्रसंघकी ॥ ६६ ॥ तथेवत्रन्याखलूयुष्यत्रिके को नृनीध्वनेवोत्रल
मानिधवायुयूजयासासुसजिनान्ननाधिया, विविधमात्मास्वत्रयुष्यदामरिधसंस्तुस्मने
वद्यरुलानिथाग्यकं ४ योत्रेध्वसर्वविधिवन्ययूक्तं ४ ॥ तदासधर्मशीवालकरुभविदधु १३
यत्रियुधुविलिकगायया, वांशुनासविकीउयतस्मा॥ यत ४ सदीयकंनद्यात्रयुविक्षय्ययगद
दित्वंशिशुकविच, लयाधममवागम, विरुतकविशुद्धन, ददस्वममनायय ४ ॥ तदावा

लकनदात्रयवीरुयनिर्युयग॥ बालकारुंरगवर्किंचित्, नास्तिथाग्यंयवमुसि ४
किंददामिममगुर्थंठगाऊर्लिनमास्यदं॥ तथानिवचनंनिशम्यरगवाचूनत्रकवान्
॥ किंचिच्चददिवालत्वंयीत्याममयूत्रय ४ विरुमात्रविशुद्ध ४ स्यात्, सन्नीयीमममानस
४ ॥ यनस्मृथानिवचनंयतिष्ठत्यरगवन्ममनदवाचत्॥ समाधिमानिमांयांशु, वमु
त्रन्यानविद्यन्त, तमवदाहुमिच्छामि, कसस्वयत्रमंश्वत्र ४ ॥ ७० ॥ यच्छायत्रमनेयदुर्धममैने
नसंभनसेकशिगुनाणीद्यंवाहंभकमंऊर्लिंठदित्वातस्मै ४ वायच्छत्॥ तदादत्तमागद

क
वि

यांशुमिदं सुवर्णं यादुर्न ॥ यूनः ४ यांशुमिदं मादाय नृभ्यः ४ संधयः ४ यदशान् ॥ तत्स
र्वं यांशुमिदं विविधं नये सिद्धिनि ॥ तदा बालकन संधयः ४ नभा वृद्धाय नभा धर्मो यन
मः ४ संधाय सवर्णं ॥ नतः ४ रगवान् सूर्यं वा शीर्षं दयु दशान् ॥ साधु सोऽस्मि महाभागः ४ कल्या
णमस्तु सर्वदा ॥ यन्मदान विद्याकन ॥ जीर्णं रवउ ननः ४ ॥ सर्वो नन्दे निविदि नः ४ दीयावर्णान् १४
नाधियः ४ ॥ चक्रवर्त्तिवदानं स्त्री रविश्च यूनः ४ वि ४ ॥ संधानयि न थाववीत ॥ यवमस्तु च ध
र्मः ४ ॥ यथिद्या यान नाधियः ॥ यूर्ध्वं यायु दानं च ॥ क मस्तु लयायूनः ४ ॥ ॐ सुखा ॥ १ नन्दे

(धो) ४ ॥ अथ सूनन्दयु मखे ४ ॥ अवके र्गवर्त्तं विद्यन्विनमत दवाचन ॥ रगवन् यत्र मां च यूर्यं
शुदाननं कथं ॥ सुवर्णं रवगकन ॥ कनानक्यु सिद्धिनि ॥ तद्यु रावे क्क दानं क्क ॥ धूमिच्छः
मिनाय कः ४ ॥ वदस्व रगवान्नाथ ॥ विधिवन्मम विस्मय ४ ॥ रगवानाह ॥ सूनन्दयत्र मां च यूर्यं मि
दं दानार्थं कनदि ॥ चिरुशु च ४ ॥ यरावन ॥ यांशुमनस्य सिद्धिनि ॥ तद्यथा शृणु सोमं द ॥ चिरुशु च
त्मन कथा ॥ विधिवन्मम वक्ष्यामि ॥ यथा चिरुस्य नत्वन ४ ॥ चिरुचलति सीमा प्रधर्म धर्म च
सर्वे नः ४ ॥ अचिरुचलति कर्म ॥ न कर्त्तव्यं सदा ऊन ४ ॥ यच्छ मिदं यमाख्या नः ४ ॥ सीमा प्रस्यर्थन

क
यि

[illegible][illegible]

क
वि

कवा नदध्यामिधुर्नक्रुधधिरुधुदयदानस्य युध्यसंख्या नविद्यत ॥ दानं वदुर्विधं
थाकं दविदस्य विष्णु प्रियः सुयार्णवसूक्तं च विष्णुर्दानसद्वर्णः ॥ ॥ इति श्री
कयि सावदान (६०) वज्रमवर्तुना नाम स्फुटीया ध्याय ॥ ॥ अथ सूत नन्दयमूखे ॥
शिवकैरुगवर्क विद्यन्मनमतदवावत ॥ रगवा ॥ इति श्रीमि तस्य बालक या कथा ॥ १३
तरुक्रुन्मान्नादान कथं दानया विस्मयेत ॥ तत्सर्वं रगवन्बुद्धिः सर्वसत्त्वार्थं नव ॥
प्रकल्पी ॥ सर्वसंसारं रवाधुयिनिमग्नकान् ॥ रगवानाह ॥ सूत नन्द यत्र मानन्द ॥ ६० ॥

श्रीमि तत्त्वतः ॥ अथ सगल्कर्षी बालसूच्यान्नामवर्धवज्र ॥ ततः ॥ कालान्नादानादीः
यावत्सर्वं वरुन् यथायत्नं कवद्धाय च सांघिकाय यांशुयदोनादि ॥ युर्वज्रममि ॥ तस्मा
द्युदानाहु विष्णुकुल्या दीयावतीरुभोचयतिर्वरुवधामयथानूधुरयतनयविनयादि
मन्त्रीगुहसमूहयाकी ॥ दीयावत्सामहानगर्थी सच्चिनिन्दानामनप्रयतिनासीत् ॥ सवदु
यतिवत्तुगयाथायविनयूध्य कृष्णमूलालं कृतं ॥ महा कवृद्धादिविरुष्णान् ॥ सर्वसत्त्व
कावधयनमवत्तुवस्वराव ॥ सकलजनानुनागयत्रिकल्पितविनीत ॥ ॥ यूनस्मस्यरा

क
यि

श्रीसोदर्यः यत्रिष्टुदमानः सकलगुणालं कनदवी धर्मावर्गिसमायन्तः ॥ अनीतय
युवजं नमयन्तस्य त्रिष्टुदकननयूधनतनदं रवदाश्वत्रः सउयति दिवानाथा
यथा ॥ तस्मिन्मय रगवादीयकं प्रसम्यकं वृद्धाय सन्शीलमहाविह्वलविह्वलनिस्त्र
तदाससर्वानन्दानामउयतः ॥ श्रीदीयकं ॥ रगवतः ॥ सम्यकं वृद्धाय त्रिष्टुयागदानचिक
मूल्यादयति स्म ॥ यतः ॥ अनाथदूःखारुजनाय चिक सस्य दानविदक्षतिना जावंस्तु
नयानाशयनासनक सुवर्कनलायमहिः ॥ यधनी ॥ यनस्ततः ॥ अनित्यसंसात्रससर्वस

कार्यः अनित्ययुगकसूक्तसदात्रा ॥ अनित्यत्राञ्चसदिससेनी नानार्थविशंसगुणक
स्तनी ॥ कामायशागीधनधान्यश्रीवराञ्च वृद्धयथायक रूतयतिनः स्वयं च तथासं
सात्रगमनं मत्रक्षेवकात्रः ॥ सख्यंददामिसगतायसयिष्टुयार्ण ॥ एवंविदित्यात्मनिमत्रा
उमोलीस सदैयतिसया ॥ यत्रूकः ॥ धर्मावर्गिशापियः ॥ मावचिक दक्षससंसात्रमः
नित्यमत्रा ॥ यथासचिकयवलीयवर्कन वर्ययथानूतलरुगुलमवभय ॥ यागोयथा
भवद्यनान्वकात्रविशूक्तर्षदर्शयति ॥ यकाशी ॥ वर्ययथाकागमिवयको तथाससंसात्रम

प्रथमं गमने च कात्र ४॥ सत्त्वाय कारादियेता सत्त्वाकला कायत्रशायव कात्र मार्ग ४॥ धर्मावः
 नी प्रवाच ॥ प्रवममुजगत्वाभ्यवममुधा प्रवसादप्रवयाचनानुभादनी कला मक्षि धमनद
 वाचन ॥ मक्षीत्तमात्मविहृदयतथा समयजायत ॥ मक्षि प्रवाच ॥ वाङ्मन्त्रधमाह्वया ॥ वा
 आवाच ॥ किं जन्मानासुगतगासनहीनदाना किं जीविनननप्रवर्णयवर्जितन सर्वविन
 धीमिरुसंसावर्मसं प्रवयायमगादिनिप्रयं चरयात्महृदय ॥ रागो यथास्त्रितलयतनी विनि १८
 मग्ननीका बुजकिजीर्णक्यथाग्निदहन्ति निप्रयं च कायान् ॥ तस्माच्च कायमनसावचसा

विशुद्धं सम्यक् ददामि सुगताय सयिष्ठयार्थं ॥ सो न्ययप्रयगुणलीलकूला रुवार्थं दानं
 विदध्या विधिधनधनकवस्तान् ॥ यथा ययुजाकसुगन्धनिवयधूयान् दीपाय ह्यत्र सक
 लं सुगन्धं सकलं ॥ तत्पूजया वां वक्ष्यीम वाञ्छं हस्तध्वगा मादिकमवसर्वं ॥ यथा हि ता वाञ्छ
 यथास्व कायान् तथापि सर्वकसुगताय यद्यो कं यिथा ॥ यथं न प्रयुक्तममेव विना निदीयं
 प्रागपूरं यथा चरययुवधून् दिवयथा क्वचित्तास्य क्षिणी च वाञ्छं तथा विना निवन
 प्रव ॥ ह धर्मकननदानं ॥ ॐ ह्यर्थसम्यक् ॥ सुखराग्य विदुर्हृदभा ॥ धर्मार्थकाममाः

क
वि

कवचुत्रारुमसंयुद्धं सीवृद्धवाधियदमद्ययमकिंलक्ष्यदुताः ४८ क्वा दयामिसगतायवृ
क्षुसयिषु यार्गं ॥ अमकु यामिसगनसंयसवाधिसत्त्वान् दीयंकवादिजिनेयुगवधम्
नाथं सीतात्रतामिदिविषीविवि (क्षयद्वारं सम्युज यामियविष्ठु च विविगुदार्न ॥ मकुवा
वा ॥ एवमैह मला वा ऊ यथा ह्याययसविशा ४८ तथा ह्यातगवान् मदीत्या कान्सी यादयाम
ह ॥ एवमैह सीता वारि स्वात दनून गार्थि च धावधायर्धकात्रयनी ॥ सीता यो वज्रना ४ सर्व सदा
नदस्य गारु ४ ४ ध्वनी दीव धर्मे यथा ह्यातु यतर्हसि ४ ॥ आवा ४ ४ कृ यूर्ध्या या मानस्यव

तमादिकं यावदाग्निनीयूर्ध्व्या गावश्चतुर्थमासत ४ ॥ यर्धर्नकात्रयिष्य ३ य सर्वमत्वा
र्थकात्रवात सीवृद्धसांयिकं सर्वं तिरु तिरु ध्यासिकाना ॥ एवा यन् ४ सत्र (धर्व येय
यस्य यथा विधिं यूर्ध्वा यवात्रकं सर्वं रुकि त ४ या जयिष्यथा ॥ ४८ तिष्ठु स्वात दनू यो वज्र
नामस्य क्वा या जयामासा ॥ तत ४ गारु सर्वानन्दयुक्त निर्मली सयविवात्र ध यूर्ध्व धूय दीयग
धनेव यरुल मूल गाम्बू वा दिविवि (क्षयवात्र सर्वयूर्ध्वर्ग मं कृ त्वा रु गवत ४ निमकु ४ ॥ य
यसन्नगी लमहा विहार्न निष्कामयन्ति निष्क म्यरु गवन् दीय के वरि ४ ४ दक्षिणी कृत्वा

क
पि

दक्षिण जानू मधुलं यथिया यामाल यमहा या ऊरु न कर यूरु अर्ली यथा क न सदि
नी वक्षा रगवर्क निमनु यामासा रगवर्दीय की नं वृद्ध धर्म नाऊ नभा मुने ॥ अम क
याम्य हं नाथ सम्यक्ता द्वि ज या यथा वृद्धाया देव सत्त्वानी समुत्पादय सर्वे त ॥ मम वा ऊ
कृमा वास दीया वर्या निधन क ॥ पूजा यथा न के पिशु या न या व रूप य कृ मि ॥ ना व द स्मि नू
प्रयर्थ्य स्तुतु म हं सि सां य नं ॥ संघ सम्भा विधि सत्त्वा दी कृत्वा न गृह य य र्थ दान नां च सवी म
मा वास त्वया वा र्थ ग लो ॥ सरु ॥ वरु यित्वा न्य चिरु क सो नि ध कृ प्र स दु यो ॥ अ वा र

२०

शुक्र पूरु या मा गच्छ धं ग था ग ना ॥ ॐ सुक्ता यथा ऊर्ली य क्रि य वान ॥ गत ४ र ग वाना
गार्व च न भव वीत ॥ सा धू सा धा म हा या ऊन म हा यूरु व ना रु म ॥ पू र्वा पि त वी ऊरु सरु
ली या नि सा धि य धा म थ स वा जा न था ग न वी र्क नि प्र सा नि धा य य न न दू र्ग य धा मं कृ त वा
न ॥ वृद्ध न मा मि नि प्र सा व य सा न था वि रु ना ऊर्ली य म न सा धि त था वि शु र्द ॥ दृष्टा थ
वा जा व नू च न था ड नो य द र्यां स ग रं य या मि ण प्र र्ण न व या द य ध ॥ ॐ ह्य र्ग य धा म कृ त्वा
स्व ना ऊ यूरु य नि य रु य मि स्मा ॥ ॥ ॐ मि णी क पि सा व दान स वी न द ऊ म व र्धु ना न

क
वि

मञ्जुवर्धनश्चायम् ॥ अथ गद नमहा वाजा ॥ यो न जना नमस्यन्दि सन्निधिषु यावत् सत्कात्रधा
य ॥ तन ४ यो न जन ननु विगल्वा दन स्नाययित्वा सैथा जया मास ॥ विविगनी नांछु कवीवरा
स्वने ई कूलयन्दा मयद्द्रष्टवस्तु ॥ यल म्ब या मास यून ४ समक्ता समनरुद्रस्य यत्रिभु
माय ॥ प्रथा सप्रथा सवचन नव धुजयवर्धन विर्यादि तात ॥ धूमो वधुधूसत्रसगन्धधु २१
यमो य कीर्येनेयुय रुला रुत ॥ सना प्रर्धयुधु यथो यदीथो निवन्ध या मास विमान
वामली ॥ सां गाय या मास स कामलन वस्तु न दीयावति नाज मा ॥ गी विविगदि यामीक

वस्तुवर्धनश्चायम् ॥ यमसयथा कर्मसु ॥ ईखादि रुयस्व नरक कारुले निर्याय या
सास विविगवायके ॥ सागाम या मास जन सुथा गगान ॥ सव द्रना वा यध ॥ क १ क १ व ४
त्रत्वा नय र्धसह दिगि नाजा ॥ जगाम दीयावति नाज मधुर्ल यागान् थावर्क ममूनीय
संघान ॥ यकावर्ग था गन ४ या निहाय नदा जनाती गत किलिषस्यन् ॥ अथ स नाजा यून
नानिषेय ॥ जिनस्य संघस्य सैद्ये ग ॥ रुमस्य ॥ सयूय नाजा दि कप्रयून नन विहाय या
मासूनीयु सघान ॥ जिन ४ सना था गत धर्म संघान् ॥ वानीय नाजा सह मन्त्रियो आ ४ समा

क
वि

कात्र४। क्रमाययित्वा यतिदशयित्वा दीयकं नैर्गणवर्धनं कात्र४। अथ दीयकं नावृद्धं ४ स
मासाययथाविधि४। गृहित्वा यिष्ठयागदी न्यस्मात्सुते ४ यवर्धन४। सिद्धिर्न वरुणनाजन
नवस्तयनिपूषुते४। अर्हं वृद्धयर्दयाया शीघ्रं गच्छथ स्वर्गनि४॥ ॐ ह्येका नर्दधू४॥ अ
थ सनीयनं नाजा सदा नासह मक्षिरि४। आकाशवायुनायुषं यथो ४ स्त्वर्गयर्जयाथा॥ २३
अथामनावनीयनं विमानसूत्रनिर्मितं। आनीययूजयामास ४ सूत्रेन यिसमादना ४।
वैसम्यं संवृद्धं ४ यर्दयाया जिनालयी गत्वा वृद्धात्मर्जरुत्वा सदानिर्वाणसंस्मृतं ४॥ ॐ नि

धृत्वा स नन्दासोष्ठावकादिगले ४ सह ४। वियज्जिनं मर्निनत्वा मूदा स्वस्वात्सर्ययू४॥
ॐ तिष्ठी कयिसावदानयिष्ठयागयदानवर्धुनानामयक्रमाध्याय४॥ ॐ ॥ अथायुषां वि
यगा किं कुर्ये गले ४ सह ४। आकाशमिदं मर्निनत्वा यार्थयिष्ठं समादनात्। रगवानसर्वविच्छासा
यिष्ठयागस्यदानं ४। कृत्वा कनविधानन नीमिर्सेयस्य वमुक ॥ सर्वयूजाणां संधाय संयय
कृति। तत्सर्वं वदमनाथ ४ सर्वसत्त्वार्थकात्रभाग ॥ ॐ तिष्ठत्वा वत्र सुस्यरि कृवस्मयून ४ यून ४।
सम्भवदनाहत्वा यत्तु वात्र ऊरु ४॥ रिक्ते ४। त्रियूग ४ स सर्वसंयस्य वमुक ॥ ॐ वि

क
वि

नामिहलाखखप्रसर्वैयूजयित्वासमादनात।संग्रहवाहयज्ञात्रं समानीयादवाह
ह॥निवृयदवयुसंस्तान् कठमायुप्रयच्छुचिं।देयंदत्वायसनिर्त्यं स्मययित्वासमर्पदना
त॥ननयंवर्धनवमुनिर्त्ययुवस्यवाधिकं।नस्मात्पुष्पव।शनर्वं कललकिं आयनं॥
मूथनवमुनि॥सर्वेदानार्थं योजयच्छुचि॥युष्पधूयाधवादीयं गन्धनेययकनथ॥
रुलमूलानयानक॥वीहिवमुदि केयून॥दीयमानायवातग॥दानसात्रां नथेव
य॥तत्सर्वं काययल्लु॥धुवसावनमानसं॥अदनंयु॥क केवेव॥मन्नयानादि के

२७

कथ॥रुधलालक रु॥श्रुष्मा॥विष्णुमृगान्नयानयन॥यातिनयायमृत्युना॥रुक्
ननवकामहान॥यनयानमि॥श्रुष्मा॥विष्णुमृगान्नयानयन॥रुक्
दि॥मलमृगान्नयानयन॥रुक्
मि॥मलमृगान्नयानयन॥रुक्
युज्य॥रुक्
यतिर्वागिनी॥४॥खज्जन्वामन्यसहिीनदियं॥विष्णुयूयाकृधियाञ्चकृष्णरु

क
वि

वक्तियानिननककगकान। यसीधिकस्यगृहकमिकर्णसर्वातिवस्तुनियतिवाययनी।
॥ गनानकीयानयिइ४ खवेकामहाकियायधसदाहियाका४। यसीधिकयूयनिनिद
यनीकुप्रधकाधनवइमीनाच॥ गदादणानिरिकल्यवर्ष४। गानियुंगयूवऊनल
त४। ययूदधर्मस्य४ सताधिकस्य४ संकल्ययूवस्यविविध४॥ सीवायुऊकिः २३
किमधिकदायितवकनिकल्यानिननकनिमग्रा। असकइ४। स्वान्यसवदऊमंयून४
यून४ऊनयनिवरुंगन॥ गयथाहृगयूवहिमयादकमरुलुथा। अस्तिरिक्कप्रणदीस्य

नहकयं३

यायानामानवीसुत४॥ नथागनकलयाति॥ गिरावगहिखलिक४। निस्सुहचिरुधर्म
युनिर्हकिधर्मवक्ति४॥ गनसंरुकिना३। निर्यसदासंदस्यवमुनि॥ सतायितनरगकच
यशासुत४। नसद्यदवमानिर्य, निर्यकिंवातसवयत॥ ननयायवसुनव, मरुवाधिलज
यन। वरुनिकाधिनकाय, यूय। गानितसचिनी॥ तदावमरुनी३४। वदतांयनरुवन
सयायीअयत्रिगा। अयनिगन। रवन॥ अयनायनकस्यार्ग, संकलाययककिनी। मे
हामूकागनागईयकनातिययूदिनी॥ यदासमुक्तिभावला, रुदाकीकगवर्जितात्। यम

वक्ररिः ४ युनः ४॥ त था विन म न या यी उ क्रि य न ग ४ म र्व त ४। न का न्य था गु ण न क स्या म
 ख वि र्क रि न त दा। न त अ ष म पि म र्व वि द अ न व द के रि ४। नाल न्य पि च स र्व धि वि र्क
 क वि द अ न ॥ क ष ष द यं च स र्व धि वि र्क ष न व द अ न। नाल उ नो य पि स र्व वि र्क
 द अ न त न ४॥ ७ वी य नि उ म र्क ४ र्व उ क्ता जी व व नि या पि सा न त ४ का लं व न या नि त था
 क ष र लान् वि ता न् ॥ ७ वी य मा ष मं च स्य ड र्व रू णि नि या य र्ज। त थै व रू ल मं य न्ना का ल

या नि र्म सै ष य ४॥ न त थ्वा ऊ र्व द्वी य जा य न म नू जा ल य। म हा दा वि द्र जा ल्वा दी
 न र्व र व न सै दा॥ त स्मा य त्ते न सै य स्य न रु ना का व य द्ध ४ व मु नि म नि सै य स्य रू
 ख भ्रा य मा रु सै ॥ त थै र्व रू स र्वो नां रू षि का नां च इ रू को न। का रि ष ना धि क स्या पि
 वि र्क र्वा ड स दा डि ने ४॥ म हा व जा य मं चै व म हा रा वा य मं त था। का ला न ला य मं स र्व जि
 न सै य स्य व मु नी॥ वि ष स्य द रु न स्या पि यु नि का व अ वि य न। सै य स्य व मु वा य स्य यु नि का
 र्त्र वि य न॥ न वि या ना धि य का न्न म कु न्न च यू कि ता न स र्व यू कि रु ता न र्व यु नि का व अ

हा कृतं ॥ तस्माच्च मतिः ४ सीधस्य सुलुच्यं था ऊयस्तदा ॥ अनुयाना ध्रुवदुर्घं गृहकृत्तदिकं
 तथा ॥ त्रिक्रि न वीययत्नेन ॥ या ऊं ३ यनसादनात् ॥ सर्वलक्ष्मीश्च सर्ववृत्तिः ॥ सीधदेतत्तल
 स्थितं ॥ ॥ निधी कयि सावदाननीति निर्देष्टवत्तुना नाम ४ यद्यमाध्यायः ॥ २२
 कयि सुधायुष्मां भात्रियुगं ॥ तगवर्तयून ४ यून ४ ॥ कृता ऊर्लियुष्मा मित्वा ॥ धृत्वायूजा रुर्लविस्यदेस्त
 नोयिषु पात्रयदानन ॥ कनयूध रुर्लवद ॥ श्रीरगवानाह ॥ शिक्रव ४ ६ ध्रुवश्चामि ॥ यूजा
 या रुलविसुत्री ॥ दानश्च दीयतयग ॥ नगयूधं रुला रुर्ल ॥ सर्वोयकात्रकं दानं दानं सर्वा

र्थकात्रकं ॥ दानं स्वगम्यसायानं ॥ सर्वरुतानि यत्र ना ॥ युगस्तदानसंज्ञात ४ यद्येकालसमरु
 वत ॥ कात्रयुद्धिवरुगं ॥ होमाश्च नादि ॥ शयन ४ ॥ गदानं रुमिदानश्च ॥ यिषु दानक ॥ धेवव
 ॥ कन्याक ॥ योमथायुगं दासीदासस्तु सर्वसंस्था सर्वसयध्वथा ॥ गयू कर्तुं यादिविचक्र ४ ॥ अ
 थागसगमकालेन कर्तुं यं सदावध ४ ॥ अयध्वसमय ॥ इहना ॥ आनत्र ४ दातुमिदं नि ॥ वर्य
 ॥ आयिवर्लतस्य ॥ यथावज्जलामिना ४ ॥ यमिना वृत्तवस्तु ॥ कयं याकिर्नसंशय ४ ॥ तस्मात्स
 र्वोयध्वश्च ॥ वर्ययित्वाययत्न ४ ॥ धृत्वायुगं च ॥ दक्षयित्वा समादयी ॥ कर्तुं यं यिषु

याग। दी। सर्वोद्धान् विस्तरैः॥ अथ गत ४ यव आ मि वि। शय रुत्त मूव ४। यानि यूजानि
 विस्तरैः। तानि सर्वोद्धानि मयि नि ४। रुमो दूकल सुक माल विविग यव ४। मीना प्रयत्न गत मः
 क य नि का या यना यन वि यूल ला ग्य महानि धानं नना वली युनि प्र रुत्त स र व यून स्या॥ रुय
 द स्या॥ न किं चिद् दृष्टं दया दमव व सुशी गलं स्व रु संग थि क्त था। य का ला या दो सु ग न ३०
 स्य शुद्ध या गत ४ क व ल ल व मय स्य सो न व ४॥ या दार्घ्य॥ स्य पीत वा सा यि त रु मि म धु लं य नि
 कु मा य य क प्रा मि ली ल या। त था ग त स्या र्थ ग। रु म स्य वा चो य मां म य म ही नु ऊ ध व ४॥

पीत व ४॥ वि की र्थ न य न स य य प्रा जी कां मो नी ल सं घा र्थ ग। रु म स्य म य द ४। रु व रु
 सो का कि व य र्थ ना धि र्यं य व रु व रु ल य दं य थो स धि ४। य य वा डि का। शी ख रु कू कु म स
 । शी र्ति ग व न ना दी नू क र्थ नि ग स तिल का न रु व रु स र्थ। न या प्र व नि ऊ ग नी तिल का य
 म लं सो न्द र्य नू य य थु द य वि ग ल वं ४॥ तिल क स्या का श्मी व शी ल रु ग ना रि स ग थि
 दि र्थं य सो ग न स्य व य यि य तिल य य नि। स रु व रु वं ४। वि य लं व रु ग थ द र्थं न र्थ र व कि
 य व म रा ग्य महानि धानं॥ सु ग ध ल य न स्य॥ रु व रु स्य तिल क र्थ स र्थ। रु द या य न दा स्य नि। ३

क
वि

गुणर्तुतिवर्धस्य। गिरवयसजायत॥ स्वर्गुगिलकस्य॥ यवालमकाशयिवनमालासं
धस्य॥ धान्विगयायुदयात॥ दयाधिदवाविरवस्यधीन॥ संताविकाशाययुधारवनि॥
मूकादिमालस्य॥ सवर्धुपूयाशयिवनविर्ग॥ यसंघयादा॥ यमंयदाय॥ संकम्यवगाकव
नंलयूर्व॥ रवनिगामीसडयोनहन॥ वलायुयानहस्य॥ सधनाथगताकिगसैरवमालिदद
नित्यासो॥ यमनविभनसहिबलखविर्गमकूठकयत्नात्॥ सयूकदवाधिकसंघसहनसम
हादवध॥ सवृद्धवाधिमहासुखमाधयषूदिर्वनयनि॥ वलमकूठस्य॥ यक्षयवीर्गसूकम

३१

लवासंसेयादयनीहय॥ धारुमस्य॥ रूयीष्टकार्यसमवायरुथा॥ नयाप्रवनीदयदंविध
ली॥ वमुस्य॥ दिद्यकायायसुवमुसहि॥ गेविकयारिलिक॥ याववर्धनसहवीवनसंघव
लेयुयन॥ दयासजानोयनयषूयतिरि॥ युनिरिस्सजन्म॥ नशीयनशीनवसनननहि
यष्टिनन॥ वीवनकायायवमुस्य॥ गवालिर्गविविधयुषसुर्गंधियुर्क॥ धान्विर्ग
समनसांयनियादयनी॥ यमोगतासहसासनसांघिकस्य॥ नयाप्रवनिस्सवगाजम
हदुलकी॥ ययमालेस्य॥ वरीरुतारवनिर्गतांमानययुदाता॥ यानमवसगिस्स

गं

हं

क
वि

विर्नलीलया वाङ्मल श्री। धर्मस्वामी रवति। नयनं सर्वलाक स्यना। (था)। च्छुग या धस। (स)
या डि के सदुज सोन र धूय वासं र क्वा द दानि सुग नाय ससो। धि काय। न या प्रव कि वि यून
धन धा न्य शा गान संवृद्ध मद्य यय दं खलू यल रक्त॥ धूय स्या॥ ने ल निला अ मू यरु क दीय
यसो धि काय य निया दय नि। सद र्ग नीथान यना रिनामा। रव कि न दि य सुखा यरा ३२
गी॥ दीय स्या॥ धा गी रु त्रि न की ल म्हा। दू डं व य ध सा दि के। स्क् थं मूला दि के दाना। य (थ) पि
नं रु लं ल रं न॥ मूल रु ला दि क स्य॥ सु धी न लं ल रं न॥ सु ग धि ना यं। स्वा दा वि र्न य न मून

वालियार्न। द द कि सं धी य ग। धा रं मा य। र क्क न वि न्या र्थ य दं ल रं न॥ क छि का य
स्य॥ ला धु य य य क न यो लि क य। स म्य ग्य दानि य म न सा दि वि धान यू के। शा (ग)
ध ना र व ति या नु वि षा न मा नं स का य वा क म न सा डि नं सां धि का य॥ ल डू का दि व म स
स्या॥ य क्क म नं ४ य क्क सु ग थ न ले। ई वी क नं ४ क छु म ला उ ना यो ४। य ना र्थ दानं व क ना नि
सं धी। न या प्रव कि सु ख मा नि धा नं॥ अ र्घा व म न स्या॥ व ल वा सु न सं य ना। ना र्ज र व कि म
रु द्वि के। सं ध य ४ शा उ नं द ला। स र्व न सु ख स ध न॥ शा उ न स्या॥ सो व र्ण वृ थ वि वि ध धा व

क
वि

उमृन्मयम्वा, शास्त्रादनैस्त्रयत्रियुक्तुसयिषुयागं। रुक्माददन्तिसुगतायग। शास्त्रमाय
स्यात्सुस्ययुध्यमसमैरुलमयमयं। यिषुयागस्य॥ मादिश्र। मन्मसवर्चकनिकनिर्नय
वेदस्यतन्मूलमहादकनादनक। तस्मैददन्तिगतनै। जिनसांयिकाय। जयायुवस्यकुन ३३
नराग्यमनाजलश्री॥ क्रीलादनस्या॥ वीदिश्र। धान्यं। विमर्षजानै। श्रुदाविर्नय॥ यदया
तिसीध। ००४ रुलनस्यतवयुनिर्यं। सर्वार्थकासंमयेतिसम्यक॥ वीक्षादिकस्या॥ जूष
नमयाययमार्गकाये। योसोददन्तिसुगतासहिदककायै। हिमेस्यवर्चविनष्टुगदका

धुचोविषुद्विमलैरुर्वचकाशी॥ दककायस्य॥ कचूचमादातिसुगधिनाये॥ यका
लनायमस्वयातविषुद्विनाया। ददन्तियासोसुगनस्यधुद्वया॥ सैधुद्वर्णविपूलक
महानिधनै॥ आचमनस्या॥ नद्याधिवागिनवष्टकहाव। मात्राग्यदानात्तिसमनकशाग्यं। रु
वत्सुधीनासुनिष्ठातवै। शास्त्रेवकदानात्सुगनमभाही॥ रंयकस्या॥ वाजायवुकवांकीधनूव
सिकूलि। शेषेकिंककादिवधे। न्रीहिनादिवायदहारवनित्रियुग। शेषायधुध्याधनाद्य॥ या
यकस्यैवजाकायन्। रुमूनिवनकांशराधुदिदानै। संधर्मसांनसावयववसुवनतनैयानि

क
वि

वृद्धत्वमय॥ सांजनस्य॥ गन्धर्वसूनकिन्नरे॥ सुहृन्नाददीयमानता विष्णुक्तालसः
प्रवृत्तां कसदृशा॥ काकारिगालिगिता॥ स्वर्गयदिवनकिदीयवयुवालीलायमाना
सनातुदत्ताय गथायनीतसमथश्च क्कालि कांशुदया॥ उक्तालकनकस्य॥ धीमावि
नीतगुणवान दीर्यसम्पूरुवृद्धिमान्॥ सुगुणविषयानन नारिजानातिदुर्गतिं॥ सुवि
सृजस्य॥ कथितेस्वगुणक अरुयनययकृति॥ विसालवृद्धियाहित्य जायुगुविजने
वेति॥ स्वउक्तस्य॥ काकायाधिसना ऊययविधुर्मासद्वर्ग (ध) क कोली स्वादूयदध

३५

सुखांसेनासुप्रयूनयदवृन्दात्रके॥ सास्वत्कोन्नराजनयूनिहितामंभंतिदिश्या
सुधां तद्वृद्धयसुखायसंय विषयस्तन्वदानाहली॥ अर्नदिकस्य॥ यत्नानवर्तुग
गर्थयुतिगुणयुतं कालेवृद्धिदिनाणि॥ आद्यामाद्यवात॥ यक्षमनत्रुवंपिष्य
खलुवृत्तं॥ ग्रीष्मकालयसिर्गंक्षिकप्रसदृशांजनसंसितक दत्तासंयप्ररक्षा
मनयुवनगतादियमात्रातियानी॥ यानकस्य॥ मोदय्ययुयुविसाकविमोक्तविमो
लकार्तिदियार्गिनाकदयहाविदि - काशवर्क॥ ताम्बूलयंगगवसंयुतसम्यदानाः

क
दि

वात, स्व। गसिनिश्च कल्याणतसहस्रमपि दयवर्थाधिवासं॥ कंन्या दयस्य॥ यथानूलतन
पार्श्वद्वयं यनयययति ४ धर्माथकामभाक्रादि। आग्रवनिर्नसंशय॥ वाक्कादिदकः
॥ मृदंगवीणाघटहादिरिथ्य ४ कर्षकियूजांसगनालेमस्या। मनश्चरुता ४ समस्तांस
पूया ४ श्वनिशयासूमनारुवाधाना। नानाविधवाद्यस्य॥ यत्र कवली क्रिमिय ४ युधाने ३५
४ कनाज्जलिं कुलवात्रुग ४ १४ ४ समुद्रावरुवत्यनत दूक्षयधामाकथयकिन
४ ४ ४ कमायुधामस्या॥ श्रीदृष्टंरुलेयू ४ ४ ४ यं वडूर्य ४ गयदानत ४ जानामिथाननः क

कुंकीर्ति ४ वमवायुवात॥ तथापिदिविशिक्तनयू ४ गदयचवायुयात॥ सर्वेषां यत्थ
संख्याधिः रुतसंख्यादिविद्येन॥ वडूर्य ४ गदययन ४ विरुक्षुक्षयदानत ४ यावकावक्रियुत्थ
धिः संख्यानिगतिर्नहि॥ तस्मात्सर्वस्यवृद्धानां मनीन्द्राणां वसवदो। अयमयमसंख्येयं रुतं
युत्थतुसाविर्ता॥ ननवांवायिवृद्धानां आवकानां यत्नापिनां। यतीनामर्हतानां वृत्तीनां
महर्षिणां॥ नयुपूष्यं वदानक ४ कल्यामादासमादवात॥ सिद्धिबुद्धि ४ यदंयाय ४ याता ४ यास्य
क्रियात्यनधाउर्वहिसर्वसत्त्वानां ४ विरुक्षुक्षनकर्मणां ४ विषुवादिनां ४ यूजां ४ दानंया

क
यि

स्वान्त्र्यार्थकलिवादतः॥यूष्माकंश्रावणकृत्तुं तथादध्यां कृतादयः॥अथर्वि
सहस्राधिःलक्षसफादशानिव॥कृतयूगवृत्तंरयानिःकल्पस्यसिनिविशने॥सूर्य
यवसर्वसहस्रधः॥विंशतिर्वयूतंरवतः॥चंद्रयवसहस्राधिःचत्वारिंशतिमायनः॥वि
ंशतिः॥यथाविचारं॥यायेनासि कदापिच॥निमिषामात्रकंतीर्थं॥यूष्माकंनिधीर
वतः॥चक्रयंसिद्धिभक्तं॥सूर्यसहस्रयवकृतं॥चक्रसहस्रकंमात्राचत्वारिंशतिहस्रक
॥आयामदीर्घतस्तवत्॥श्रीनरस्यमात्रकं॥लक्षकवर्षमायूश्च॥जीविनंतावसंशय

३८

॥मातृन॥यिनत्रवाध॥जायतयूगकं॥चक्र॥चक्रमात्रादिनंदीर्षसकवाचनिवाचयत
॥सकमचक्रवदाजा॥यूगकं॥चक्रवर्तन॥मध्याह्नकमायस्ययूष्माकं॥यूगदयः॥क
कृतमादया॥सन्धिः॥अथोसाहसिकाधिकं॥यववतिसहस्राधिलक्षसफादशानिव॥च
तायीकल्पमाख्याया॥सखासयिचविश्रम॥सूर्ययवसहस्रधः॥दशमनयूतंरवतः॥वि
ंशतिः॥सहस्रधः॥चंद्रयवसहस्रधः॥यवदशं॥विचारं॥यूष्माकं॥कल्पयवकृतं॥याय
विचारसकं॥यव॥विधिवाचांयवकृतं॥तीर्थसत्रवर्तनीत्येव॥यूष्माकं॥यिसमकृतं॥यूष्माकं॥

क
वि

दिनीयम्. काययन्नाहसंय ॥ एकविंशतिकं हसं. शरीरस्य यमाधकं. मानत्र ४ वि
नत्रवायि. त्रय ४ युगम् वायन ॥ दशसहस्रमायुष्य. जीविनयत्रमायुष्य. एकवात्रायिने
वीवीजं. विविवारिनिवात्रयन ॥ एकविंशतिकं वाजा. जनायां यत्रिवर्तन ॥ जगद्वायत्रया ३
४ सन्धि. षट्सहस्रविधीयन ॥ सैश्यायां शुक्रवेष्टाय. रुनीयायाश्च दायत्र. युगादयसमा
यन. कल्यमेन द्विधीयन ॥ अत्र ४ षष्ठीसहस्राणि. जूहो लक्षादिर्मखाया ॥ सूर्यपर्व
सहस्राष्ट्र. अष्टाविंशतिकं कथा ॥ जूहो यध्यस्य विष्वासे. यायस्य द्वाद. दश ४ वृद्धावि

क. सु. (थे वाथ. कपूकगारखनीर्थकी ॥ वाम. छा. खगदादवी. मज्जाना ४ यत्रमध्वरी ॥ गिराः
श्रीगयसर्गाय. वावायकन. (थेवत्र ॥ हसमानशरीरस्य सकमात्राधिकन ३. मानत्र ४ वि
नत्रवायि. दिनीययुगजायन ॥ एकवर्षसहस्रस्य. जीविनयत्रमायुष्य. एकमात्रायिने वीजं
द्विवारिनुनिवात्रयन ॥ अष्टाविंशतिकं वडाजा. दायत्रवर्तनसदा. दायत्र ४ कलिसन्धिश्च.
यत्वालिंशत्सहस्रकं ॥ अर्द्धवात्रैरुनवम्यासीं शुक्रकार्त्तिकमासिक. ३ दथायुगमनम्.
कलिसर्वमायन ॥ अष्टाविंशतिकं सहागि. यत्वालिंशतिकं कर्क. कलि ४ कल्यसमाख्याना

कलागण्डविचरुणा॥ कलिकृतव्या॥ सध्वजलालिङ्गसहस्रक॥ अकृतकृतकल्य
 यस्मिन्नवनसंशय॥ सूर्ययवसहस्रकं, द्वितीयं चतुर्वर्कं। चतुर्थं यथैव विष्णुसं
 कथा उग्राया यजाय न॥ जाकवीतिथिमाख्याया॥ विद्यादवीध्ववीचसा॥ सर्वत्र यदुक्तनिर्ण
 यि एकविंशतिरुक्तं॥ मानवार्गस्य विस्तरधा॥ एकविंशतिरुक्तं यि, यत्रिंशत्तु वा यत्र॥ ४०
 विंशतिरुक्तं वर्गं, जीविर्नयत्रमायुषं॥ एकमात्रादिर्नवीजं, भक्तवार्त्तनिवात्रमा
 नायिनासुर्नवायि, गुणविशेषरूपेण च॥ अथ लिखितानि दृष्टा, धूर्तधूर्तयुवर्त्तन। यत्र

लविर्न॥ २२

विंशतिरुक्तं ब्रह्मा, यूगकलोयुवर्त्तन॥ अथ यूगदयं स्थातं, यद्विबुधनसर्वदा। गथांशु
 क्रान्ता दृष्ट्या, मूखायामदयात्रव॥ वदुःसूर्यादथाग्रासं, संक्रान्ताविविधं वनं॥ यिषु
 यागादिकंदानं, महायुधं महाहूलं॥ चतुर्द्धा यदृथिव्यादि, सर्वमाकाशमवच। आवर्त्त
 यत्रिवर्त्तस्य, त्रयः॥ संख्यातिविद्यनं॥ चतुर्द्धा यूगदयस्यावियवर्त्तस्यार्चये सर्वथा। यिषु
 यागयदानस्य, युधसंख्यानविद्यनं॥ सुमनू॥ यद्वेनादींश्च, यथिवीश्वरसर्वस॥ उल
 यित्वा च मूर्त्तयां, गुणसंख्यातिविद्यनं॥ जिनस्य॥ धर्मसंध्यस्य॥ यिषु यागयदानस्य॥

क
यि

[illegible]

त्वारुर्जयभवा. कागमवाथ अक्र ३४। त्रसिंठ त्वा सुभवांसं. यत्ने कंच न दक्र वं॥ यावन्म
 सिचनत्सर्वं गतिर्दुःखक नमया। नस्य विद्यु यदानस्य, संख्या कर्तुं न क्षमता॥ चतु। दीय
 पृथिव्या दीन गवांसं वा ययु वान। क्रियन्ति सर्ववान् ८ जायन्ति सहितत्त्वा न॥ मर्द
 यित्वा च न संघातं। गोतिश्च न दरो दिरि॥ नत्सर्वं गतिर्दुःखक. मर्क कंच नमया रेली॥
 वृद्धस्य ४ धर्मसंघस्य ४ विद्यु यार्ण यदानत ४ यथा मया नस्य, संख्या कर्तुं न क्षमता॥
 मासि द्वादशमीपूर्व, चतुर्दीययूसर्वत ४ नाशो दिवा सदा वर्ष, धायायार्ण रवि स्थिति॥ नव

क
वि

यदि दमके के गति उं धन मया विधु याग सदान स्य यथा सखा न गच्छत ॥ च उ दी
यद्यथिया दीन शिली य स्य दुर्म वन ॥ तस्य वृक्षस्य सर्वस्य यग सखा रि विद्यत ॥ यानि व
रुल यथा वि जी जानि क क्षलानि व ॥ मूलान्यपि व स र्वानि ॥ तज ४ सखा रि विद्यत ॥ एत य
मद य विधु याग दान स्य य ४ ४ ४ रुल न स्य य व कुं च का दि व द न ग क्र या त ॥ अना दि
हि स से क न स सां सौ प्र च वा म्य दं ॥ किं म या च न य ध्या मि ॥ किं म या च न जानू या त ॥ किं म या च
न क रू च ॥ किं म या च न ग क्र या त ॥ तथा पि च न जाना मि ॥ विधु याग स्य था रु ल ॥ क नान्य न ग

४२

कू व नि ॥ स स्य य धं रु ली व द न ॥ तस्मा त्ता दा दि व द न ॥ अ सखा य ध्य रा पि ना ४ ॥ अ स्य वं य
ध्य स र्वा र्थ च तु र्य ॥ ग य वा प्र यो त ॥ त स्मि दि क्षा त्रि य गार्थ ॥ वा ड न्य ध्य स वा प्र या ग ॥ त स्मा
त्सं म्य क स व द ४ य दं या य सखा वे मि ॥ ग त्वा व द्वा त्त जं रु त्वा वा ज नि र्वा ध ग र्हे नि ॥
॥ मि शी क पि सा व दान यू ग दि व धु ना ना मा य ध्या य ४ ॥ अ ध्या त ४ स स्य व द्वा
मि च तु र्य ग स्य य द न ॥ त स र्व ध धु न रि कू ४ ॥ अ त्रि य ग ४ स र्म द वा त ॥ य ग मू द व ना ४
व द्वा णा व धा स्य व रु न ॥ व द्वा स प्र रु दा ध र्म ॥ म य वा सा हि नि नि त्रि त ॥ अ धो वा च व र्ध

क
वि

स्त्रीर्न. कृत्वा न लंघयति वा यसा ॥ तन्मा वृद्धे ॥ धर्म ॥ संचयेत्याल ययूव ॥ यध म्या दो सुतिं
कृत्वा. निर्याच्चर्नैसमाचरत ॥ कविता ॥ ७३ ॥ स्वाध्याय. कविजाय ॥ जोययत ॥ कविदायैव
निर्धाय ॥ कृत्वा नित्यं यदक्रेष्णं ॥ कविर्देहात्रिका न्यूजी. रुकिर्त्तक अकचने ॥ लकधाय
ह्यविस्त्रानि. विधिवरुण कीरुयंत ॥ एक र कानिवाहारी. मासमर्क समाचरत ॥ विहयदवता
मूर्ति ॥ यदादियुनिमान्कथा ॥ अवेता र्ययदीय ॥ कृत्वा यागो न दोक वागे ॥ नानावृत्तिवर्त
कार्य. यथा शास्त्रा कसुद्धिभिं ॥ यनयनविधानन. तनननहि वि अर ॥ न को र्य ॥ ८ ॥ न नया ॥

५२

७४ नमिथा वदत नथा ॥ नगुर्न निन्दयदवान्. नय ॥ मिषमासिन ॥ कवल मय वास
॥ स्या दुर्गी निनामिषासिन ॥ न दुर्गादि कं सर्व ॥ यन क नयू ॥ गदय ॥ यूवा ॥ सक क
लान्यव. याक सक कूलानिवाभावयित्वा यत्यायी. मा कं या निनर्सं य ॥ अथ रा
ययद मास. गुकर्यं ददणीति ॥ थो ॥ दीय यागो य क र्योच्च. शकात्सव कर्मधी ॥ नानावाया
दिवा दना. नृयगीमादि निर्मूया ॥ लेनुयूजा ॥ य ॥ क र्योत्सया याक सुखावती ॥ अथ
विनीतथा ॥ गुक्. यनिययादि कीति थी ॥ बुद्धि ॥ दिम रुदवी. यथा कमादया रवत ॥ न

क
वि

वन्ध्या मूगचन्द्राच दशम्या विजयात वनानदादवीयूजनीया. वाञ्छे चर्यमवायूयागा
कलोचदवगा गोत्री. कार्तिकयूयवर्तेन। तदा गोत्रीवर्ते कुर्यात्सहामादे महान्तो॥
महाचैयक्तिर्नयश्च दीयनचयदीयकं। यासो कुर्यात्तुदयसं४ कामार्थलतनचर्वे॥ न
थान्यकात्रयसुर्वो योषधं च विधायन४ वर्यस्तात्वाचगंगाया मरुत्यवालिका उलि४
चेत्यविम्वय कर्त्तव्य निर्यसंयूयमादगात्सर्वसिद्धि४ पदं वा यय४ सया या सुखाचर्य
॥ तथायती मय कयञ्चवर्ते कर्त्तव्यथावधं। मासमकी निनाहाययथागकाथवायून४ एक

४४

रुकासिनारुत्वा पूर्वमासीनियावत४ थावधंमावत४ कुर्यात्तुतागयाहियागयत॥
संपूर्णचन्द्रमायूक पूर्ववर्तेसमावत॥ सुचैत्यंयूनरुत्वाचन्द्रमीमधुलन्यसक्त॥ ये
वायवात्रकं दीयं बुदद्यात्ताउर्गमर्ते। सुवेर्धुवूर्धुय कन अर्धदद्यात्तुमादत४। आश
क्तसयर्वेगानिय४ सगर्भ निस्वर्गेति॥ मार्गशीर्षचनस्यान्त अन्तपूर्वमहीतल। तदाध
न्यवतीलक्ष्मी देवी संयूयमादगात्॥ सर्वशस्यवती गह निष्ठकियविप्रविता४। महा
धनामरुशागा। याकवात्सर्वदासुखी॥ तत४ यो यदुमासक यदालिनाग्निवाविषाहा

क
चि

गामिसमंयुधं भद्रयहस्य यरुवन शितायांवरुनमाध सामसाधवदवका ॥ तदास्
प्रदुर्नविष्कृदिमस्तानमावत्रागु ॥ रिक्ताथीदधुसंधार्य ॥ यदावृणानिप्रवत्रागु ॥ नित्रा
मिवामिनाधृत्वावृणीकृत्वाचिथोषधं ॥ नीर्थयागं च गनेय ॥ ४६ ॥ स्त्रीवायंरुवादनै ॥ माध
वाग्नाधर्वनामं संस्मर ॥ ४७ ॥ ल्यनकथा ॥ ४८ ॥ सिमंभंश्चानमावयविष्कृव ॥ सावनाप्रयत्न ॥ नि
प्रसांजलयदं धारां सुदुर्गवातया ॥ ४९ ॥ चूना ॥ ५० ॥ वंनधाविधंयुधं ॥ यासोक्रयोर्चिमातवे ॥ ५१ ॥
मूकयित्वाचयत्यायं विष्कृलाकंसगच्छति ॥ ५२ ॥ लुलुधुक्रयक्रु यज्ञाविन्दस्यदा

४३

दधी ॥ तदागस्यवृर्गकृत्वा लहायत कनाशनै ॥ ५३ ॥ वेगमासगथा ॥ ५४ ॥ नवमीतिधिसंयुक्त ॥ म
दादवीयूजनीय लक्ष्मीसकतिवर्द्धन ॥ ५५ ॥ दायप्रदवना ॥ ५६ ॥ वेगभवर्तनसहा ॥ तदास्
प्रदुर्नग ॥ मादयित्वासमादत्रागु ॥ ५७ ॥ क्रुयक्रुनीयायां स्नानंयगदि काप्रयत्न ॥ ५८ ॥ यस्या
क्रुयक्रुयानि यायीयुर्धस्यजमति ॥ ५९ ॥ तथाचदशमीशुक्र ॥ ६० ॥ मासकजदिन ॥ सु
स्नाययवृनीयग ॥ ६१ ॥ यवाद्यशमीरुनास्मृत् ॥ ६२ ॥ द्रवगदशयायायानि ॥ कायवाक्रिरुजाम
सि ॥ तथायिपूष्माप्राति ॥ ६३ ॥ शिवलाकंसगच्छति ॥ ६४ ॥ आवाचवगथा ॥ ६५ ॥ यनियद्यादिनानि

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ सर्वभूतहिते रतः ॥
॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ सर्वभूतहिते रतः ॥
॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ सर्वभूतहिते रतः ॥
॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ सर्वभूतहिते रतः ॥
॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ सर्वभूतहिते रतः ॥
॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ सर्वभूतहिते रतः ॥
॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ सर्वभूतहिते रतः ॥
॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ सर्वभूतहिते रतः ॥
॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ सर्वभूतहिते रतः ॥
॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ सर्वभूतहिते रतः ॥